वानिकी समाचार

अर्धवार्षिक

वर्ष 7 | जनवरी–जून 2015 | अंक–1

बंगलुरू में "चिंतन शिविर"

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (का.वि.प्रौ.सं.), बंगलुरू ने एन. आई.ए.एस., बंगलुरू में 08 तथा 09 फरवरी 2015 को ***चिंतन शिविर*** आयोजित किया। इसमें दक्षिण भारत के वन अधिकारियों, प्रदूषण बोर्ड तथा सम्बन्धित विभागों के वैज्ञानिकों ने भाग लिया और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विचार–विमर्श और आत्मनिरीक्षण किया।

बंगलुरू में चिंतन शिविर

गंगा के लिए वानिकी हस्तक्षेप पर डी.पी.आर. की तैयारी

☞ **वन अनुसन्धान संस्थान (व.अ.सं.), देहरादून**, गंगा में वानिकी हस्तक्षेप पर डी.पी.आर. तैयार करने में सक्रियतापूर्वक काम कर रहा है। उत्तराखण्ड राज्य के लिए व.अ.सं. में पहली परामर्शी बैठक 16 तथा 17 अप्रैल 2015 को आयोजित की गई, जिसमें उत्तराखण्ड राज्य वन विभाग के अधिकारी, प्रतिनिधि, उत्तराखण्ड जैवविविधता बोर्ड, पेयजल निगम, एफ.एस.आई., यू.जी.वी.एस.,एस.पी.एम.डी.जी, एन.जी.बी. आर.ए., कृषि विभाग और फलोद्द्यान विभाग तथा संस्थानों के भागीदार जैसे राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान, भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, हिमालयी भू–विज्ञान वाडिया संस्थान, भारतीय सर्वेक्षण विभाग आदि से करीब 110 भागीदार शामिल थे।

☞ उत्तर प्रदेश में गंगा पर वानिकी हस्तक्षेप हेतु डी.पी.आर. तैयार करने के लिए **सामाजिक वानिकी तथा पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र (सा.वा.पा.पु.के), इलाहाबाद** में 11 तथा 12 मई 2015 को एवं बिहार में गंगा पर वानिकी हस्तक्षेप हेतु डी.पी.आर. की तैयारी के लिए पहली परामर्शी बैठक का आयोजन 19 तथा 20 मई 2015 को हुआ।

☞ गंगा पर वानिकी हस्तक्षेप हेतु डी.पी.आर. की तैयारी के लिए पांच राज्यों के हितधारकों की प्रारम्भिक बैठक **व.अ.सं., देहरादून** (25 तथा 26 मई 2015) में डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने औपचारिक रूप से वेबसाईट *www.forganga.in* को जारी किया।

गंगा में वानिकी हस्तक्षेप पर डी पी आर तैयार करने हेतु हितधारकों की पहली राष्ट्रीय स्तर की बैठक का शुभारम्भ

रेगिस्तानीकरण का मुकाबला करने के लिए यू.एन.सी.सी.डी. कार्यशाला

☞ **भा.वा.अ.शि.प., देहरादून 'रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र की अवधारणा पर 10 वर्षीय रणनीति के तहत राष्ट्रीय कार्ययोजना कार्यक्रम के रेखांकन (यू.एन.सी.सी.डी.)'** हेतु 22 अप्रैल 2015 को भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

यू.एन.सी.सी.डी. 10 वर्षीय रणनीति के तहत रेगिस्तानीकरण रोकने के लिए राष्ट्रीय कार्य–विधि का रेखांकन हेतु एक दिवसीय कार्यशाला

☞ **शु.व.अ.सं., जोधपुर** द्वारा भी यू.एन.सी.सी.डी. के तहत 18 मार्च 2015 को रेगिस्तानीकरण रोकने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विदेशी बैठकों/कार्यशालाओं/सिम्पोजिया आदि में सहभागिता

☞ डॉ. बी. गुरूदेव सिंह, जी.सी.आर., डॉ. ए. निकोडीमस, वैज्ञानिक–ई, डॉ. शिव कुमार वैज्ञानिक–ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा 17 से 27 जनवरी 2015 तक यू.एस.ए.डी. के तहत बैठक करने के लिए थाईलैण्ड का दौरा किया।

☞ डॉ. वी. पी. तिवारी, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा अनुसन्धान प्रस्ताव तैयार करने के लिए 01 से 15 फरवरी 2015 तक जर्मनी का दौरा किया गया।

☞ डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा "**एशिया सी तथा आई क्षेत्रीय कार्यशाला**" में भाग लेने के लिए 28 से 30 अप्रैल 2015 तक फिलीपीन्स का दौरा किया गया।

☞ डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा "**तीसरे विश्व टीक सम्मेलन 2015**" में भाग लेने हेतु 11 से 15 मई 2015 तक इक्वेडोर का दौरा किया गया।

☞ श्री वी. आर. एस. रावत, वैज्ञानिक–ई, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में, जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र संरचनात्मक अवधारणा में वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सलाहकार समनुषंगी निकाय के 42वें सत्र में 01 से 11 जून 2015 तक बॉन्न, जर्मनी में भाग लिया।

☞ डॉ. एन. एस. के. हर्ष, वैज्ञानिक–जी, व.अ.सं., देहरादून ने वानस्पतिक सर्वेक्षण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के सूत्रबद्धीकरण हेतु सलाह देने के लिए कम्बोडिया का दौरा किया। उन्होंने 05 से 11 जून 2015 तक आई.सी.सी. की तकनीकी समिति की बैठक में भी भाग लिया।

कार्यशालायें/सेमीनार/बैठकें आदि

☞ **भा.वा.अ.शि.प., देहरादून** द्वारा "**वानिकी अनुसन्धान के महत्वपूर्ण निष्कर्षों का प्रदर्शन**" पर 24 से 25 फरवरी 2015 में वन विज्ञान भवन, नई दिल्ली में अनुसन्धान कार्यशाला का आयोजन किया गया।

☞ **भा.वा.अ.शि.प., देहरादून** द्वारा परियोजना निष्पादन के लिए कार्य योजना को अन्तिम रूप देने हेतु "**भारत में औषधीय पादपों की मांग और आपूर्ति के आकलन हेतु अध्ययन एवं सर्वेक्षण**" पर 08 मई 2015 को एक दिवसीय प्रारम्भिक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

☞ **वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन (व.आ.वृ.प्र.सं.), कोयम्बटूर** दक्षिणी क्षेत्र इनविस केन्द्र (अर्थात् कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आन्ध्र प्रदेश और पुडुचेरी) के लिए कोयम्बटूर (टी.एन.) में 05 तथा 06 फरवरी 2015 को क्षेत्रीय मूल्यांकन एवं प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कोयम्बटूर में दक्षिणी क्षेत्र के इन्विस केन्द्र के लिए क्षेत्रीय मूल्यांकन एवं प्रशिक्षण कार्यशाला

☞ **व.अ.सं., देहरादून** तथा अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त पर्वतीय विकास केन्द्र (आई.सी.आई.एम.ओ.डी.) द्वारा संस्थान में 18 से 22 जनवरी 2015 तक "**पर्वतीय वानिकी रूपान्तरण**" पर अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम का आयोजन किया गया, जिसमे विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान (व.व.अ.सं.), जोरहाट द्वारा निम्नलिखित बैठकों/संगोष्ठियों का आयोजन किया गया :

☞ राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित ***एक्वीलेरिया* (अगर)** पर 31 जनवरी 2015 को गोहाटी में हितधारकों की बैठक।

☞ 10 तथा 11 मार्च 2015 को "**भारत में अगर काष्ठ पर की गई नई खोजें**" पर राष्ट्रीय सेमीनार। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. अश्वनी कुमार, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा की गई।

भारत में अगर काष्ठ पर हाल ही में की गई खोजों पर राष्ट्रीय सेमीनार: व.व.अ.सं., जोरहाट

☞ **बांस एवं बेंत के लिए उन्नत अनुसन्धान केन्द्र (ए.आर.सी.बी.आर.), आईजल** द्वारा 14 मार्च 2015 को "**उत्तर–पूर्वी भारत में बांस और बेंत से जीविकोपार्जन सुविधायें**" पर एक दिवसीय सेमीनार।

उ.व.अ.सं., जबलपुर में राष्ट्रीय जैवविविधता बोर्ड, चेन्नई द्वारा प्रायोजित "**जीवविज्ञानीय वैविध्य अधिनियम 2002 : वैज्ञानिक समुदाय के लिए बाधायें एवं सुअवसर**" पर 19 तथा 20 मार्च 2015 को कार्यशाला।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये :

☞ सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों के लिए 05 से 09 जनवरी 2015 तक "**जलवायु परिवर्तन एवं कार्बन न्यूनीकरण**" एवं 02 से 06 फरवरी 2015 तक "**जलवायु परिवर्तन : संवेदनशील तथा अनुकूलन रणनीतियाँ**"।

☞ भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए 25 तथा 26 जून 2015 को "**भारत में रेड्ड प्लस : समस्यायें एवं चुनौतियां**"।

व.अ.सं., देहरादून द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये :

☞ भारतीय तटरक्षक के 12 कमांडेंट्स के लिए "**तटवर्ती पारिपद्धति का संरक्षण एवं प्रबन्धन**" पर 12 से 16 जनवरी 2015 तक।

☞ राज्य विभाग के अधिकारियों (डी.सी.एफ./ए.सी.एफ.) के लिए "**जलवायु परिवर्तन अनुकूलन**" पर 09 से 13 फरवरी 2015 तक ।

☞ मेसर्स फेथ लम्बर प्राईवेट लिमिटेड, गांधीधाम, गुजरात के कार्मिकों के लिए 23 से 27 फरवरी 2015 तक "**काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**" पर पांच दिवसीय अनुकूलन प्रशिक्षण कोर्स ।

☞ "**हिमाचल प्रदेश और पंजाब के किसानों, शिल्पकारों तथा स्वावलम्बी वर्गो के लिए बांस हस्तशिल्प की तैयारी**" पर 25 से 27 फरवरी 2015 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स ।

☞ बिहार के फॉरेस्टरों तथा फॉरेस्ट गार्डो के लिए बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित **कृषि वानिकी तथा भू–प्रबन्धन** पर 16 से 20 फरवरी 2015 तक ।

☞ राज्य वन विभाग के (डी.सी.एफ./ए.सी.एफ.) अधिकारियों के लिए 08 से 12 जून 2015 तक "**आपदा जोखिम प्रबन्धन में वानिकी की भूमिका**" विषय पर ।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये:

☞ वन विभाग के अधिकारियों के अलावा अन्य सरकारी विभागों के अधिकारियों के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित "**वन, वन्यजीव एवं पर्यावरण संरक्षण**" विषय पर ।

☞ 30 मार्च 2015 को एच.ए.डी.पी. निधिकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम "**नीलगिरी जिले के जनजातीय लोगों की आजीविका वृद्धि में औषधीय पादपों तथा अन्य वन उत्पादों की भूमिका**" पर ऊटकामण्ड, नीलगिरी जिसमें नीलगिरी जिले के जनजातीय लोगों तथा एन.जी.ओ. के सदस्यों ने भाग लिया ।

☞ नीलगिरी जिले की महिला किसानों तथा महिला स्वावलम्बी वर्गो के लिए 9 अप्रैल 2015 को ऊटकामण्ड में "**उत्पादन, अनुरक्षण तथा अनुप्रयोग के लिए जैव उर्वरक तथा जैवखाद तकनीकों**" पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन ।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (का.वि.प्रौ.सं.), बंगलूरू ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

☞ "**चन्दन काष्ठ–बीज प्रहस्तन, पौधशाला तथा रोपण तकनीक**" पर 16 से 20 फरवरी 2015 तक ।

☞ नेवल डॉकयार्ड विशाखापट्टनम में सेवारत कार्मिकों तथा प्राईवेट संगठनों के अन्य भागीदारों के लिए "**मुख्य प्रकाष्ठों की कार्यक्षेत्रीय पहचान**" पर 02 से 06 मार्च 2015 तक ।

☞ "**बांस उपयोजन एवं प्रसार**" पर मैसूर में मेसर्स सुशीरा (मैसूर का एन.जी.ओ.) तथा अरीबू स्कूल के साथ उद्यमियों, कला विद्यार्थियों, वास्तुशिल्पियों तथा किसानों के लिए 8 मार्च 2015 को प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

☞ पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा भा.व.से. अधिकारियों के लिए "**काष्ठ उत्पादों पर खोज एवं उपयोजन**" पर 06 तथा 07 मई 2015 को ।

व.व.अ.सं., जोरहाट ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

☞ वन्यजीव विंग, वन विभाग, मानद वन्यजीव वार्डन, वन्यजीव कार्यकर्ताओं, मीडिया कर्मियों तथा मणिपुर सिविल सोसाइटी के सदस्यों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, 23 जनवरी 2015 ।

☞ डायरक्ट–टू–कन्ज्यूमर स्कीम के तहत तिनसुकिया, सिवसागर, जोरहाट, नागांव तथा मोरी गांव, असम के 28 प्रशिक्षणार्थियों को "**परम्परागत बांस हस्तशिल्प के उत्थान और शिल्पियों के कौशल उन्नयन के लिए क्षमता वृद्धि तथा सुधारित तकनीक, उपयुक्त डिजाइन तथा मूल्यवृद्धि परियोजना**" के तहत 16 से 28 मार्च 2015 तक बांस आभूषणों पर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला ।

व.व.अ.सं., जोरहाट में बांस आभूषणों पर प्रशिक्षण

☞ गोलाघाट वन प्रभाग, असम के 60 जे.एफ.एम.सी. सदस्यों के लिए कृषि वानिकी प्रशिक्षण तथा कम लागत की वर्मीकम्पोस्ट तकनीकें – 22 तथा 23 मार्च 2015 को ।

☞ त्रिपुरा बाँस एवं बेंत विकास केन्द्र, एक एन.जी.ओ. के तत्वावधान में बांस के परिक्षण के लिए प्रर्दशन केन्द्र मे एक तकनीकी प्रर्दशन सत्र का आयोजन ।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा बांस उपचार तकनीकों का प्रदर्शन

☞ फ्लेमेन्जिया आधारित लाख की खेती पर प्रशिक्षण कार्यशाला – पानीसागर वन रेंज कार्यालय, उत्तरी त्रिपुरा, 20 जून 2015 ।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये:

☞ हर्दा, नरसिंगपुर, पन्ना, छतरपुर, गुना, सिंगरौली तथा सिधी में म.प्र. राज्य बांस मिशन परामर्शी के तहत बांस शिल्पकारों के कौशल उन्नयन

हेतु एक–एक सप्ताह के नौ प्रशिक्षण, 01 जनवरी से मार्च 2015 तक।

- "**उपकरण प्रहस्तन पर प्रशिक्षण**" पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण, 23 से 27 फरवरी 2015 तक।
- "**कृषि वानिकी सिद्धान्त एवं प्रबन्धन प्रद्वतियों**" पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम, 01 से 05 जून 2015 तक।

सी.एफ.आर.एच.आर.डी.,छिन्दवाडा ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये:

- "**परागणकर्ता/किसानों के मित्र कीट तथा जैवकीटनाशक/आँवला की छाल को खाने वाले कैटरपिलर का पारिस्थितिकी के अनुकूल प्रबंधन**" पर सौसर, कन्हान तथा अम्बादा रेंज, दक्षिणी छिन्दवाड़ा प्रभाग के राज्य वन विभाग कर्मियों के लिए 09 फरवरी 2015 को प्रशिक्षण कार्यशाला तथा मौदाई गांव, छिंदवाडा जिले के किसानों के लिए 10 फरवरी 2015 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।

हि.व.अ.सं., शिमला ने निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये :

- "**अतिश, बनककड़ी चौरा तथा अन्य उच्च मूल के शीतोष्ण औषधीय पादपों को खेती**" पर शनेरी, रामपुर (हि.प्र.) में एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन, 11 फरवरी 2015।
- "अन्य हितधारकों की प्रशिक्षण" योजना के तहत "**औषधीय पादपों की खेती**" पर प्रशिक्षण, 20 से 25 मार्च 2015 तक, रामपुर, शिमला।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये :

- झारखण्ड तथा आस–पास के राज्यों के किसानों के लिए "**बांस उगाना, प्रबन्धन तथा विपणन**" पर बी.टी.एस.जी. प्रायोजित, 23 से 27 फरवरी 2015 तक, रांची।
- "**एन.टी.एफ.पी. की खेती के जरिये किसानों का जीविकोपार्जन**" के साधन उपलब्ध कराने के सम्बन्ध में एस.आई.आर.डी.–एन.आई.आर.डी. द्वारा प्रायोजित, 09 से 14 मार्च 2015 तक, रांची।
- "**बांस के उत्पादन, उपयोजन, मूल्य वृद्वि तथा विपणन**" के लिए एस.आई.आर.डी.– एम.आई.आर.डी. द्वारा प्रायोजित, 16 से 21 मार्च 2015 तक।
- "**वैज्ञानिक लाख की खेती से किसानों का सामाजिक आर्थिक उत्थान**" पर, 17 तथा 18 मार्च 2015, न्यूक्लियस ब्रूडलैक फार्म, छांदवा, लातेहर।
- जनजाति बाहुल्य वन क्षेत्र बुन्डू में *फ्लेमेन्जिया सेमिआलाटा* आधारित वैज्ञानिक ढंग से लाख की खेती कर ग्रामीणों के सामाजिक – आर्थिक उत्थान हेतु, 3 फरवरी 2015।
- "**किसानों के सामाजिक – आर्थिक उत्थान हेतु वैज्ञानिक ढंग से लाख की खेती**" पर राज्य औद्योगिकी तथा ग्रामीण विकास रांची द्वारा प्रायोजित, 09 से 14 फरवरी 2015 तक।
- जनरल प्रोडयूज कम्पनी, गुवा के सहयोग से "**वैज्ञानिक लाख की खेती से किसानों का सामाजिक आर्थिक उत्थान**", सारंदा, जोजोगुटू, सारंदा वन प्रभाग, पश्चिमी सिंघभूम में, 23 तथा 24 मार्च 2015 को।

व.उ.सं., रांची में "वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती करने पर किसानों का सामाजिक–आर्थिक उत्थान"

वन जैवविविधता संस्थान (व.जै.सं.), हैदराबाद द्वारा आन्ध्र प्रदेश के लिए सतत् कृषि वानिकी मॉडल पर 09 से 11 मार्च 2015 तक संस्थान परिसर, हैदराबाद में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

सा.वा.पा.पु.के., इलाहाबाद द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये :

- उपभोक्ताओ के लिए "***जैव–निकासी तथा मृदा सुधारों द्वारा जल प्लावित वनस्पतिक औषधीकरण***" पर निष्कर्षो का प्रसार करने हेतु तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- ग्रामीण विकास में सामाजिक वानिकी पर भविष्य शैक्षिक एवं परोपकारी सोसाइटी के प्रशिक्षणार्थियों के लिए 24 से 26 फरवरी 2015 तक विशिष्टीकृत कार्यक्रम।
- स्थानीय किसानो के लिए पूर्वी उत्तरप्रदेश मे कृषि वानिकी पर प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शन, 18 मार्च 2015।

उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम

अनुसन्धान निष्कर्ष

- **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** ने लाभकारी जीवाणुओं का उपयोग करते हुये बंजर लाल मिट्टी (लैटराइट) को सुधारने का प्रयास किया है। लाभकारी जीवाणु जैसे ए.एम. फंजाई, फोस्फोबैक्टीरियम तथा *एजोस्पीलियम* की सम्वृद्धि करके *स्वीटीनिया मैक्रोफाइला, एलन्थस ट्राईफिसा, होलोप्टेलिया इन्टीग्रीफोलिया* तथा *ब्यूटिया मोनोस्पर्मा* के

पौधों में संचारित किया गया। संचारण के बाद ये पौधे लैटराइट मृदाओं को पोटिंग मीडिया के रूप में इस्तेमाल करते हुए उगाये गये। स्थल रोपण प्रदर्शन का अध्ययन करने के लिए सुधारित पौधों को बंजर लैटराइट मृदा वाली भूमियों में रोपित किया गया। न्यूनतम जलीय स्थितियों के बावजूद रोपित पौधों में नई पत्तियां और शाखायें आने लगी।

लैटेराइट मृदाओं में रोपित *ए. ट्राईफिसा* के पौधे

लैटेराइट मृदाओं में रोपित *एस. मैक्रोफाइला के पौधे*

रोपित पौधों में उत्पन्न पत्तियां

☞ **व.अ.सं., देहरादून** में *फाईकस रॉक्सबर्घाई* की पर्णविगलक साइलिड, एप्रोस्टोसिटस परजीवी *पारोसाइला फिसीकोला* की नई प्रजाति की पहचान की गई हैं।

☞ **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** ने तमिलनाडु से एकत्र कृषि–वानिकी मृदा नमूनों से एक्टीनोमाईसेट आईसोलेट्स को पृथक करने का प्रयास किया गया। एक्टीनोमाईसेट्स के 35 विभिन्न आइसोलेट्स की प्रतिरोधक क्रिया–कलाप का निर्धारण करने के लिए चयनित पादप रोगजनक फंजाई पर परीक्षण किया गया यथा: इन विट्रो स्थितियों में *फ्यूसेरियम मोनिलीफॉर्म, राइजिक्टोइया सोलानी* तथा *स्केलरोशियम रॉल्सार्ई*। चयनित पादप रोगजनकों के विरू) 35 एक्टीनोमाइसेट्स में से एक आईसोलेट (एक्टीनोमाईसेट नं. 2:10) ने जोरदार प्रतिरोध प्रदर्शित किया। आईसोलेट को आणविक अभिलक्षण (जीन बैंक एक्शेसन फार्मूला : *स्ट्रेप्टोमाइसिस* के.पी.970678) के जरिये *स्ट्रेप्टोमाइसिस सेम्पोनाई* के रूप में चिन्हित किया गया।

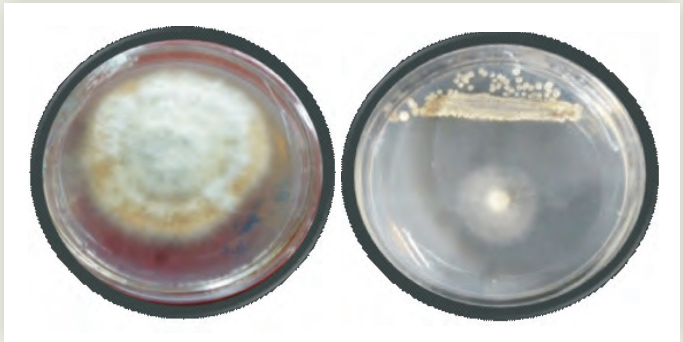

कंट्रोल (*फ्यूसेरियम मोनिलीफॉर्म* में)

एफ. मोनिलीफॉर्म के विरूद्ध एक्टीनोमाईसेट द्वारा निषेध

☞ ***एक्रोमोबेक्टर जाइलोक्सीडेन*** – **सक्षम पादप वृद्धिकारक तथा जैवनियंत्रण एजेन्ट** : **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** ने चर्मशोधशाला बहिस्राव उपचार प्लान्ट, डिन्डीगुल, तमिलनाडु में एक बैक्टेरियम आईसोलेट, एक्रोमोबैक्टर का पता लगाया है जो पादप वृद्धि का उत्तम वृद्धि कारक है और जिसे पापद रोगजनक के विरूद्ध जैवनियंत्रण क्रिया–कलाप के कारक के रूप में विश्लेषित किया गया। यथा: इन विट्रो स्थितियों में *अल्टरनेरियम सोलानी, कर्ब्यूलारिया लुनाटा* तथा *फ्यूसेरियम आक्सिसपोरम* बैक्टीरियम आइसोलेट को क्रमश: *सी. लुनाटा* (95 प्रतिशत) और *ए. सोलानी* (85 प्रतिशत) तथा *एफ. आक्सिपोरम* (80 प्रतिशत) के विरूद्ध अत्यन्त प्रभावी पाया गया।

☞ **का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू** में बांस की नालों पर विभिन्न स्थितियों में किये गये उत्तकीय–संरचनात्मक तथा जैव रसायन अध्ययनों के अनुसार, पुष्पित बांस में अपुष्पित बांस की तुलना में मंड की मात्रा कम होती है और पुष्पन से बांस की मुड़न क्षमता कम नहीं होती है। निष्कर्षों से पता चलता है कि पुष्पित बांस को बिना अधिक नुकसान के, लम्बे समय तक भण्डारित किया जा सकता है और गैर पुष्पित बांस के समान उपयोग किया जा सकता है।

☞ **का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू** ने कार्बोक्सीमेथिल सेल्यूलोज के संश्लेषण पर एक सक्षम नया उपाय विकसित किया है जो विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए व्यापक रूप से प्रयुक्त जैव पालीमर है।

प्रतिष्ठित व्यक्तियों का आगमन

☞ हेम पाण्डे, भा.प्र.से. अतिरिक्त सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय का 9 अप्रैल 2015 को का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू का दौरा।

☞ प्रो. क्लाउस वी गाडो, वन सम्पदा एवं सुदूर संवेदन संस्थान, गोडिन्जेन विश्वविद्यालय जर्मनी का अप्रैल 2015 के दौरान एच.एफ.आर.आई., शिमला का दौरा।

☞ महामहिम, श्री के. के. पॉल, राज्यपाल, उत्तराखण्ड का 22 मई 2015 को आई.सी.आई. एम.ओ.डी. सिम्पोजिया के समापन समारोह में व्याख्यान।

☞ श्री अशोक लवासा, भा.प्र.से. सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय का 16 जून 2015 को व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का दौरा एवं एक नये जैव कीटनाशक "**क्रॉल क्लीन**" जारी किया जिसे पपाया मीली बग के नियंत्रण हेतु संस्थान ने विकसित किया है। उन्होने "**कैज्यूरियाना – नकदीफसल : लाभ योग्य खेती**" पर एक पुस्तिका का विमोचन भी किया।

सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में कैज्यूरियाना पर पुस्तिका का विमोचन

प्रकाशन

☞ **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** द्वारा प्रकाशित पुस्तकें : बांस–महत्व, उपयोजन तथा संरक्षण – कर्मियों तथा अन्य विभागों के लिए प्रशिक्षण मैनुअल, इनविस न्यूजलैटर – वन विज्ञान, "कैज्यूरियाना – नकदी फसल के रूप में : लाभकारी खेती के लिए मार्गदर्शिका", जैव उर्वरक तथा जैव–खादें – उत्पादन तकनीकें, अनुरक्षण तथा अनुप्रयोग (तमिल में)।

☞ **हि.व.अ.सं., शिमला** द्वारा अतीश, चौरा तथा वन ककड़ी सहित विभिन्न औषधीय पादपों पर पुस्तिकायें/ब्रॉसर्श/पैम्पलेट्स प्रकाशित किये गये (हिन्दी में)।

☞ **व.व.अ.सं., जोरहाट** ने "नोनी : सर्व रोग मुक्ति के लिए चमत्कारी पादप" पर ब्रॉसर्श प्रकाशित किया।

परामर्शी

वैज्ञानिक सेवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचाने तथा प्रभावी पर्यावरणीय प्रबन्धन के लिए भा.वा.अ.शिप. द्वारा निम्नलिखित क्रियाकलाप किये गये :

☞ भा.वा.अ.शि.प., देहरादून : केन्द्रीय खनन् एवं ईंधन अनुसन्धान संस्थान, धनबाद तथा भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून की टीमों ने 25 से 28 फरवरी 2015 तक आरम्भिक कार्यक्षेत्रीय दौरा किया। सर्वेक्षण से **"पश्चिमी सिंहभूम जिला, झाड़खण्ड में सारंदा क्षेत्र की क्षमता"** पर ड्राफ्ट अन्तरिम रिपोर्ट तैयार की गई।

☞ "हिमाचल प्रदेश पॉवर कार्पोरेशन लिमिटेड को सुरगामी सुन्डला पर ई. आई.ए./ई.एम.पी. की अन्तिम रिपोर्ट दी गई, 05 मई 2015।

☞ "कोल इन्डिया लिमिटेड तथा आनुषंगिक कोयला कम्पनियों द्वारा प्रचालित 20 खुली कोयला खदानों के पर्यावरणीय ऑडिट" पर अध्ययन का कार्य कोल इन्डिया लिमिटेड, कोलकाता को दिया गया।

☞ **वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून** ने भारत कोकिंग कोल इन्डिया लिमिटेड, धनबाद के साथ परामर्शी सहयोग करने पर सहमति दी।

☞ **हि.व.अ.सं., शिमला** को एच.पी.एस.एफ.डी., शिमला द्वारा दिये गये **"कैम्पा के तहत उगाई गई रोपणियों का मॉनीटरिंग तथा मूल्यांकन"** कार्य की नई परामर्शी सेवायें दी गई हैं।

☞ **उ.व.अ.सं., जबलपुर** को पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्र, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी, अभिकल्प एवं विनिर्माण, संस्थान, जबलपुर द्वारा डूमना जबलपुर में स्थानीय पर्यावरण में संक्रमण करके अपने परिसर में हरीतिमा कायम करने के लिए परामर्शी कार्य दिया गया है। संस्थान ने सी.एफ.सी. तथा हितधारकों की क्षमतावृद्धि के लिए तकनीकी मूल्यांकन पर म.प्र. राज्य बांस मिशन पर परामर्शी सेवायें पूरी कर ली हैं।

एकस्व अधिकार (पेटेंट)

☞ **का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू** ने **"साबुन के नये संघटन"** पर प्रावधानिक पेटेंट फाइल किया है।

वृक्ष उत्पादकों का मेला/किसान मेला

☞ का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू ने 09 से 11 जनवरी 2015 तक बंगलुरू अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शन केन्द्र, बंगलुरू में आयोजित "किसान–2015 : भारतीय कृषि व्यवसाय मेला" में स्टाल लगाया।

☞ व.उ.सं., रांची ने 29 जनवरी 2015 को भारतीय प्राकृतिक रेजिन एवं गोंद संस्थान, नमकुम, रांची में आयोजित वार्षिक किसान मेला एवं प्रदर्शनी में भाग लिया।

☞ व.व.अ.सं., जोरहाट ने आजीविका प्रबन्धन तथा जलवायु परिवर्तन के न्यूनीकरण हेतु वृक्षारोपण पर जागरूकता बढ़ाने हेतु किसानों, वानिकों तथा सामान्य जनता के लिए 20 तथा 21 मार्च 2015 को दो दिवसीय वृक्ष उत्पादक मेला (उत्तर–पूर्वी भारत में पहली बार आयोजित) का आयोजन किया।

व.व.अ.सं., जोरहाट में वृक्ष उत्पादकों के मेले के भागीदारों के साथ पारस्परिक विचार–विमर्श सत्र

विविध

विश्व वानिकी दिवस

☞ **वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून** द्वारा 21 मार्च 2015 को विश्व वानिकी दिवस मनाया गया, जिसमें पोस्टरों और मॉडलों के माध्यम से संस्थान के सूचना केन्द्र में संस्थान की उपलब्धियों को चित्रित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सभी संग्रहालयों में सामान्य जनता को निशुल्क में प्रविष्टि दी गई।

विश्व पर्यावरण दिवस

☞ **व.व.अ.सं., जोरहाट** ने 5 जून 2015 को हरिदेव कलाकृति केन्द्र, मोरी झांझी, जोरहाट (असम) में जोरहाट आधारित एन.जी.ओ. के सहयोग से "रंगोनी" दिवस मनाया। विश्व पर्यावरण दिवस 2015 के अवसर पर कंचनपुर, त्रिपुरा में 3 से 5 जून 2015 तक पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए, वन आधारित जीविकोपार्जन पर किसानों की बैठक तथा परामर्शी कार्यशाला आयोजित की गई।

☞ **उ.व.अ.सं., जबलपुर** तथा **सी.एफ.आर.एच.आर.डी., छिन्दवाड़ा** द्वारा यह दिवस 05 जून 2015 को मनाया गया। संस्थान द्वारा व्याख्यानों के जरिये पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम मनाया गया।

☞ **शु.व.अ.सं., जोधपुर** ने अन्य क्रिया–कलापों के साथ – साथ इस अवसर पर परिसर में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया।

☞ **हि.व.अ.सं., शिमला** ने पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करते हुए इस दिवस का आयोजन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस (आई.बी.डी.)

☞ 22 मई 2015 को भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों में आई.बी.डी. समारोह मनाया गया। समारोह का आयोजन व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर के

इनविस केन्द्र में किया गया। उ.व.अ.सं., जबलपुर, वा.अ.मा.सं.वि.के., छिंदवाड़ा, का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू, व.व.अ.सं., जोधपुर, हि.व.अ.सं., शिमला तथा व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा इस अवसर पर कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये।

रेगिस्तानीकरण रोकने के लिए विश्वदिवस

☞ **हि.व.अ.सं., शिमला** द्वारा रेगिस्तानीकरण रोकने के लिए 17 जून 2015 को विश्व दिवस मनाया गया, जिसमें संस्थान के वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहायकों ने भाग लिया।

45वां पृथ्वी दिवस

☞ **हि.व.अ.सं., शिमला** द्वारा 22 अप्रैल 2015 को अपनी उभरती हुई पश्चिमी हिमालयी शीतोष्ण वनस्पति वाटिका, पॉटर हिल, शिमला में 45वां पृथ्वी दिवस मनाया गया।

पुरस्कार

☞ डॉ. डी. एन. तिवारी, पूर्व महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. को बांस संवृद्धि के लिए जीवनभर किये गये प्रयासों के उपलक्ष्य में विश्व बांस संगठन द्वारा 2015 का "विश्व बांस पायनीयर अवार्ड" प्रदान किया गया।

☞ श्री देवेश तिवारी, जे.आर.एफ., रसायन प्रभाग, व.अ.सं., को "*ओसीमम्स किलीमेन्ड्सकेरीकम* की एन्टीडिप्रेस्सेन्ट क्षमता का आकलन" नामक सर्वोत्तम पोस्टर प्रस्तुति पर प्रथम पुरस्कार दिया गया।

☞ डॉ. विपिन प्रकाश, वैज्ञानिक–डी, व.व.अ.सं., जोरहाट को साधना (मानव एवं प्रकृति उन्नयन सोसाइटी, डॉ. वाई.एस. परमार फलोद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश) द्वारा "एचीवर अवार्ड 2014" दिया गया। उनके द्वारा, सूक्ष्म जीवाणु विविधता इन्डोमाइकोरिजा के क्षेत्र में किये शानदार वैज्ञानिक योगदान के लिए जैवविविधता में जार्ज बेंथम अनुसन्धान अवार्ड 2015 प्रदान किया।

☞ डॉ. एन. राय चौधरी, डॉ. एन. कुलकर्णी, एस चंद्रा, आर. बी. सिंह तथा ए. के. दास, उ.व.अ.सं., जबलपुर को 24 से 28 नवम्बर 2014 को देहरादून में आयोजित तेरहवें सिल्वीकल्चर सम्मेलन में, "साल अन्त:काष्ठ छेदक *होप्लोसेरैम्बिक्स स्पीनिकॉर्निस* भृंग के विरूद्ध जैव एवं रासायनिक कीटनाशकों की विषाक्तता तथा प्रकाष्ठ डिपो में वृक्ष ट्रैप्स और लठ्ठों में उनकी क्षमता" पर प्रस्तुत पोस्टर के लिए प्रथम पुरस्कार दिया गया।

☞ अध्यात्म क्षेत्र पर्यावरण संस्थान, जोधपुर द्वारा शु.व.अ.सं., जोधपुर को 28वां वृक्ष बंधु पुरस्कार दिया गया।

वी.वी.के. के तहत क्रियाकलाप

☞ **व.अ.सं., देहरादून** द्वारा 13 फरवरी 2015 को वी.वी.के. तथा के. वी.के. नेटवर्किंग के तहत दामला, यमुनानगर में "**कृषि वानिकी प्रजातियों की बीमारियों और कीटों के प्रबन्धन**" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

☞ **सी.एफ.एल.ई., त्रिपुरा** के अंतर्गत 60 जे.एफ.एम.सी. के सदस्यों ने वी.वी.के. प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत वर्मीकम्पोस्ट तकनीकों के बारे में त्रिपुरा के केन्द्रों का दौरा किया।

राजभाषा समाचार

☞ व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 26 मई 2015 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "केन्द्र सरकार के कार्यालयों तथा आई.टी. उपकरणों के प्रचालन में हिन्दी का महत्व।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

☞ व.व.अ.सं., जोरहाट तथा उ.व.अ.सं., जबलपुर में भी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

वार्षिक समीक्षा

☞ परियोजना को समय पर पूरा करने के लिए सभी भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों की 363 परियोजनाओं (258 भा.वा.अ.शि.प. निधिकृत तथा 105 वाह्य निधि प्राप्त) की वार्षिक समीक्षा की गई।

अर्धवार्षिक प्रगति समीक्षा

☞ सितम्बर 2014 तक एकल परियोजनाओं के अर्धवार्षिक अवलोकनों को भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों से प्राप्त करके कार्ययोजना के अनुसार विश्लेषित किया गया और आवश्यक कार्रवाई हेतु सम्बन्धित निदेशकों को टिप्पणियाँ भेजी गई ।

पूर्ण की गई परियोजना रिपोर्टों का विश्लेषण

☞ जनवरी से जून 2015 तक भा.वा.अ.शि.प. को परियोजना पूर्ण होने की 81 रिपोर्ट प्राप्त हुई हैं, सक्षम प्राधिकारी द्वारा इनमे से 60 रिपोर्टों का विश्लेषण किया जा चुका है और स्वीकार किया गया है।

विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन

☞ विश्वविद्यालयों द्वारा दी गई स्वमूल्यांकन को पुन:चेक करने और मूल्यांकित करने के लिए भा.वा.अ.शि.प. की मूल्यांकन टीम ने पांच विश्वविद्यालयों का दौरा किया यथा : पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब), नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी (गुजरात), केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिसूर (केरल), सेम हिग्गिन बाटम कृषि, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद (उ.प्र.) तथा एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड)। भा.वा.अ.शि.प. के साथ वानिकी कोर्स का प्रत्यायन करने के लिए छ: विश्वविद्यालयों से प्रस्ताव मांगे गये हैं।

अनुसन्धान एवं विस्तार के साथ वानिकी शिक्षा नेटवर्किंग

☞ एन.टी.एफ.पी. पर नेटवर्किंग परियोजना के तहत नवसारी कृषि विश्व विद्यालय, नवसारी, गुजरात तथा शेर–ए–कश्मीर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू–कश्मीर से वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्राप्त हुई हैं।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

भा.वा.अ.शि.प./एम.ओ.ई.एफ.सी.सी. में सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ निम्नलिखित परियोजनाओं तथा सहयोगिता ज्ञापन भेजे गये और सम्बन्धित संस्थानों को अनुमोदन भेज दिया गया है :

राष्ट्रीय :

1. एमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोयडा तथा भा.वा.अ.शि.प., देहरादून के बीच।
2. व.अ.सं., देहरादून तथा औद्योगिकी अनुसन्धान एवं विकास पर अवन्था केन्द्र, के बीच दो अनुसन्धान परियोजनाओं के लिए सहमति ज्ञापन जारी किया गया ।
3. "**भारतीय काष्ठ का उपयोग करते हुये शराब का मैच्यूरेशन**" नामक परियोजना के लिए व.अ.सं., देहरादून तथा यूनाईटेड स्प्रिट्स लिमिटेड, बंगलूरू के बीच समझौता ज्ञापन।
4. "**राजस्थान राज्य न्यायिक अकादमी, जोधपुर के लिए शहरी वानिकी मॉडल नामक परियोजना के लिए शु.व.अ.सं., जोधपुर**" का राजस्थान राज्य न्यायिक अकादमी के साथ समझौता ज्ञापन।
5. नीति आयोग द्वारा निधिकृत "बिहार के लिए विशेष योजना के अन्तर्गत संयुक्त समुदाय आधारित वन प्रबन्धन" नामक परियोजना को नीति आयोग द्वारा 30 सितम्बर 2015 तक विस्तारित किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय :

- व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर की "**प्रिकली अकेशिया के लिए नये जैवनियंत्रण सुअवसर : भारत में खोज**" नामक परियोजना को कृषि विभाग, मत्स्य एवं वानिकी, आस्ट्रेलिया के साथ जून 2015 तक विस्तारण के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को प्रस्तुत किया गया।

डॉ. अश्वनी कुमार, भा.व.से., महानिदेशक, का भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों का दौरा

☞ डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 16 से 18 फरवरी 2015 तक व.उ.सं., रांची का दौरा किया।

☞ डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने 18 मार्च 2015 को सी.एस.एफ.ई.आर., इलाहाबाद का दौरा किया और किसानों के प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

☞ व.उ.सं., रांची ने 29 जनवरी 2015 को भारतीय प्राकृतिक रेजिन एवं गोंद संस्थान, नमकुम, रांची में आयोजित वार्षिक किसान मेला एवं प्रदर्शनी में भाग लिया।

☞ व.व.अ.सं., जोरहाट ने आजीविका प्रबन्धन तथा जलवायु परिवर्तन के न्यूनीकरण हेतु वृक्षारोपण पर जागरूकता बढ़ाने हेतु किसानों, वानिकों तथा सामान्य जनता के लिए 20 तथा 21 मार्च 2015 को दो दिवसीय वृक्ष उत्पादक मेला (उत्तर–पूर्वी भारत में पहली बार आयोजित) का आयोजन किया।

☞ डॉ. अश्वनी कुमार, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा 11 से 13 जनवरी 2015 तक हि.व.अ.सं., शिमला तथा उसके फील्ड स्टेशनों का दौरा किया गया। अपने प्रवास के दौरान उन्होने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं में जारी कार्य का निरीक्षण किया और संस्थान के परिसर में नव निर्मित "पुस्तकालय हॉल" का उद्घाटन किया।

डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. स्वागत करते हुए डॉ. वी. पी. तिवारी, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला

कैज्यूरियाना के पांच उच्च उत्पादक कृन्तकों का वाणिज्यिक प्रसार

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा विकसित कैज्यूरियाना के पांच उच्च उत्पादन कृन्तकों का वाणिज्यिक प्रसारण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रलेख – ए.पी.पी.एम. लिमिटेड के साथ अन्तिम लाईसेन्स एग्रीमेन्ट किया। इन पांच कृन्तकों यथा : व.आ.वृ.प्र.सं.– सी.जे.–7, व.आ.वृ.प्र.सं.– सी.जे.–9, व.आ.वृ.प्र.सं.– सी.जे.–10, व.आ.वृ.प्र.सं.– सी.एच.–1 तथा व.आ.वृ.प्र.सं.– सी.एच. 2 का विपरीत परिस्थितियों में व्यापक परीक्षण किया गया और पाया गया कि ये निर्दिष्ट अनुवृद्धियों की तुलना में 25–30 प्रतिशत तेजी से उगती हैं। कम्पनी ने इन कृन्तकों को 10 वर्ष तक कृषि वानिकी कार्यक्रमों के तहत किसानों को मुहैया कराने के लिए वाणिज्यिक प्रसार हेतु 10 वर्ष की लाईसेन्स फीस का एक मुश्त भुगतान किया है।

संरक्षक :

डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक

सम्पादक मण्डल :

श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार)
अध्यक्ष
श्री राजा राम सिंह, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
मानद सम्पादक
श्री रमाकान्त मिश्र, वैज्ञानिक–बी (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)
सदस्य

प्रत्याख्यान

"वानिकी समाचार" में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।

प्रेषक :
श्री राजा राम सिंह
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार)
विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
ई–मेल : adg_mp@icfre.org
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693